कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र

KURUKSHETRA UNIVERSITY KURUKSHETRA

(Established by the State Legislature Act XII of 1956)

('A^{+}' Grade, NAAC Accredited)

3.4.10

Documents for Publications of

Dr. Jitender Acharya

on Distance Education at DDE during last five years.

Dr. Jitender

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 4.012

यतोमहि स्वराज्ये
ISBN : 2229-7227

International Refereed

चिन्तन

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, शिक्षा, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)
अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल
(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest, U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
(Indexed & Listed at : UGC Journal List No.41243)
(Peer Reviewed)

वर्ष : 9 अंक : 33(III)
विक्रमी सम्वत् : 2076
जनवरी-मार्च 2019

संपादक
आचार्य (डॉ०) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत

ISO 9001 : 2008

- Changing Dimension of Adultery in Indian Context: A Critical Analysis
  Dr. Gaurav Kaushik 97-102
- बच्चों के शारीरिक विकास में पूरक आहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन
  डॉ. मणीषा कुमारी 103-108
- गठबंधन के राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका
  डॉ० संजीव कुमार राय 109-112
- सांख्य दर्शन में सत्कार्यवाद सिद्धान्त का समीक्षात्मक अध्ययन
  डॉ० संतोष कुमार झा 113-117
- बिहार के पंचायती राज में दलित महिलाओं का नेतृत्व
  डॉ० अलका कुमारी 118-121
- भारत में सहकारी आन्दोलन का विकास
  डॉ० मुकेश कुमार ठाकुर 122-127
- सामाजिक विकास के परिप्रेक्ष्य में युवाओं का व्यक्तित्व संरचना
  डॉ० अपर्णा कुमारी 128-132
- गीता में योग द्वारा वैश्विक कल्याण का संदेश
  डॉ० जितेन्द्र आचार्य 133-147
- पाश्चात्य ऐतिहासिक परंपरा में सौंदर्य विवेचन
  डॉ० कुलदीप सिंह 148-155
- The Sentencing Process and Disparity- Analysis
  Santosh Pratap Singh 156-162
- प्रर्यावरण और नेपाली का काव्य
  डॉ० दिवाकर चौधरी 163-167
- गीतिकाव्य
  डॉ० बाल्मीकि कुमार द्विवेदी 168-170
- नागार्जुन के कथा साहित्य में मनोवैज्ञानिक चित्रण
  डॉ० कृष्ण पाल 171-175
- हरियाणा के रण बाँकुरे : सतनामी
  Ruchi Vats 176-178
- Electromagnetic Pollution : A New Challenge before Law Making Authorities
  Dr Jitender Singh Dhull, Kusum Yadav 179-185
- Online Dispute Resolution in India
  Hemant Gupta 186-193
- दुष्यन्त कुमार : एक वैचारिक व्यक्तित्व
  डॉ.रेखा साहू 194-197
- मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री विमर्श
  अल्पना भारती 198-200
- भारत-रूस सम्बन्ध: समग्र विश्लेषणात्मक अध्ययन
  Rakhi Kushwah, Dr. Vinod F. Khobragade 201-212

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.pramanaresearchjournal.com
Impact Factor : 4.005

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2249-2976

Pramāna

Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List Sl. No. 41241
(Peer Reviewed)

Year : 8
Issue : 31(iii)
Jan-March 2019
www.pramanaresearchjournal.com

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

शोध–आलेखानुक्रम

- Good Governance (Challenges and problems of Good Governance)
  Vikas Kumar 18-22
- A study on the Awareness about Pradhan Mantri Ujjwala Yojana among the rural people of Varanasi
  Dr. Bala Lakhendra 23-28
- बाल्मीकीय रामायण में वर्णित सांस्कृतिक मूल्य–आधुनिक विश्व को संदेश
  डॉ० विनय सिंघल 29-33
- Social Realism in Omprakash Valmiki's Autobiography 'Joothan'
  Rajesh Kumar 34-37
- Contemplation to Combat Technological Abuses
  Dr Mukesh Agarwal, Dr Sunita Arora 38-41
- The Enigma of Identity: A Study of Selected Modern English Poetry by Indian Diaspora
  Dr. Tripti Choudhary 42-46
- प्रेमचंद व्यक्तित्व एवं कृतित्व
  डॉ. कुमार चैतन्य प्रकाश 47-50
- Role of Education in Promoting Peace
  Dr. Rajbala 51-57
- कार्ल मार्क्स का समाजवादी चिंतन
  Dr. Chandan Kumar 58-62
- Indian Diaspora: A Study of JHUMPA Lahiri's Major Fictions
  Gurtej Singh 63-67
- ललित कला : आशा और चुनौतियां
  डॉ. मदन सिंह राठौड़, मुकेश सालवी 68-71
- ग्रामीण छत्तीसगढ़ में महिला सशक्तीकरण में शिक्षा की भूमिका
  परमेश्वरी, डॉ०के०एन०दिनेश, डॉ० सुचित्रा शर्मा 72-77
- Coolie: The SAGA of Sufferings of Downtrodens in the ERA of Pre-Independence
  Gurtej Singh 78-82
- मूल्य के परिपेक्ष्य में अग्रिम व्यवस्थापक प्रतिमान व परम्परागत शिक्षण विधि का गणित शिक्षण में प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन
  डॉ० सचिन कौशिक 83-89
- गीता से मानसिक समस्याओं की चिकित्सा
  डॉ० जितेन्द्र आचार्य 90-99
- श्री अरविन्द एवं आचार्य रजनीश के चिंतन में राजनीति के संदर्भ में विश्वशांति का अवधारणा
  शालिनी रानी दास, डॉ० अशोक कुमार 100-103

International Refereed
UGC List No.41243
Impact Factor : 4.012
Peer reviewed

'चिन्तन' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN : 2229.7227)
वर्ष 9, अंक 33(III) (पृ.सं. 90-99)
विक्रमी सम्वत्: 2076 (जनवरी-मार्च 2019)

गीता से मानसिक समस्याओं की चिकित्सा

डॉ० जितेन्द्र आचार्य
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत
D.D.E., Kurukshetra University,
Kurukshetra (Haryana)

शोध-आलेख सार

आज के तकनीकी संचालित डिजिटल संसार ने मानव जीवन के लगभग हर पहलु को प्रभावित किया है। आधुनिक युग में भौतिकवादी जीवन शैली से जीवन यापन करने के लिए धन और प्रसिद्धि की प्राप्ति मनुष्य का परमप्रयोजन बन गया है। दिन-प्रतिदिन बढ़ती इस मृगतृष्णा ने मानवीय जीवन में पारंपरिक सामाजिक नैतिक व्यवस्था, सामाजिक आदर्शों व शुद्ध सात्विक प्रतिस्पर्धा के अधः पतन और विखण्डन को पैदा कर दिया है। आज और आने वाले भविष्य में प्रतिस्पर्धा की अधिकता स्पष्टतया दृष्टिगोचर हो रही है। इस प्रतिस्पर्धा में प्रत्येक वर्ग चाहे वह विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी, व्यापारी, किसान, मजदूर, दुकानदार हो या राजनेता, अभिनेता हो या संन्यासी हो। अपने-अपने कार्यक्षेत्र में अधिक से अधिक धन, यश, साधनों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हैं व मन चाहा परिणाम प्राप्त न होने पर परिणामस्वरूप असंतोष, क्रोध, चिंता, अवसाद और मानसिक असंतुलन होने पर अपराध प्रवृत्ति की ओर बढ़ रहा है। भौतिक सम्पन्नता और संसाधनों की प्राप्ति के बावजूद भी अकेलेपन की समस्या मानव को मानसिक विकारों की ओर खींच रही है। यह स्पष्टतया परिलक्षित हो रहा है कि भौतिक सम्पन्नता को प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा और संसाधन आधुनिक युग में बड़ी तीव्रता से बढ़ रहे हैं व निरन्तर बढ़ते ही रहेंगे। ऐसी अवस्था में मानसिक विकारों, चिंताओं व समस्याओं का निवारण गीता द्वारा कैसे सम्भव हो सकता है। इसी विषय को आधार बनाकर प्रस्तुत शोध-आलेख में मन का स्वरूप, मानसिक विषय व दोष, मानसदोषों का समाधान ज्ञान, विज्ञान, धैर्य, स्मृति व समाधि, अहितकारी विषयों से मन का निरोध इन बिन्दुओं के माध्यम से उल्लेख करने का प्रयत्न किया गया है।

मुख्य-शब्द : स्वस्थावस्था, मनोबुद्धि, समाधि, अवसाद, मनोबुद्धि, आत्मज्ञान ।

मन का स्वरूप

मन-ज्ञाने धातु से मनः शब्द की उत्पत्ति होती है। व्याकरिणक दृष्टि से 'मन्यतेऽनेन् मन् करणे असुन् प्रत्यय से मनः शब्द निष्पन्न होता है। मन का अर्थ है समझ, प्रत्यक्ष ज्ञान, प्रज्ञा, निर्णय या विवेचन की शक्ति, विचार, संज्ञान और प्रत्यक्ष ज्ञान का आन्तरिक अंग या मन, वह उपकरण जिसके द्वारा ज्ञेय पदार्थ आत्मा को प्रभावित करते हैं।[1]

न्यायदर्शन में मन को एक द्रव्य या पदार्थ माना गया है जो आत्मा से सर्वथा भिन्न है। मन का लक्षण करते हुए गौतम मुनि कहते हैं-

Pramāna International Refereed
UGC Approved No. 41241
Impact Factor : 4.005
Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-8, Issue-31(iii) (Jan.-March 2019) (Page No. 133-147)

गीता में योग द्वारा वैश्विक कल्याण का संदेश

डॉ० जितेन्द्र आचार्य
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत
D.D.E., Kurukshetra University,
Kurukshetra (Haryana)

शोध-आलेख सार

योग विद्या भारत के ऋषि मुनियों की अमूल्य धरोहर है । सभी श्रुति-स्मृतियाँ योग की महिमा का वर्णन कर रही हैं । गीता के उपदेश को देने वाले योगिराज श्रीकृष्ण स्वयं एक योगी थे। समाधि से कर्मक्षेत्र तक, योग का व्यापक वर्णन हमारे शास्त्रों में विद्यमान है । योग सभी सम्प्रदायों और मतमतान्तरों में निर्विवाद सार्वभौम स्वीकार्य है । इसका कारण है आज की विकट सामाजिक परिस्थिति में वैदिक धर्म संस्कृति, सभ्यता, रीति-नीति, परम्पराएँ आदि लुप्तप्राय: हो गई हैं। इसके विपरीत केवल भोगवादी और अर्थवादी परम्पराओं का अत्यधिक प्रचार-प्रसार हो रहा है । स्थायी सुख-शान्ति की प्राप्ति के लिए आज के मनुष्य ने घोर पुरुषार्थ किया है और करता भी जा रहा है । सारी पृथ्वी का स्वरूप ही बदल डाला है । तदुपरान्त भी वह समस्त दु:खों की निवृत्ति और नित्य आनन्द की प्राप्ति नहीं कर पाया । इसी प्रकार चलते रहने पर भविष्य में भी पूर्ण लक्ष्य शन्ति की प्राप्ति की कोई संभावना नहीं है । काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वैषादि मानसिक रोगों का समाधान केवल धन सम्पत्ति व भौतिक विज्ञान से कदापि सम्भव नहीं हो सकता । इन मानसिक रोगों का समाधान तो अध्यात्म विद्या और योग के द्वारा क्रियात्मक रूप देने से ही सम्भव हो सकता है, अन्यथा नहीं । आज के हजारों भौतिक वैज्ञानिक तन-मन व धन से भौतिक विज्ञान के आविष्कारों में लगे हुए हैं और वे इसी से समस्त दु:खों की निवृत्ति और नित्यानन्द की प्राप्ति को सिद्ध करना चाहते हैं परन्तु भौतिक उन्नत्ति के साथ-साथ आध्यात्मिक योग विज्ञान की आज के समय में अति आवश्यकता है। जिसका वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता में योगिराज श्रीकृष्ण द्वारा सार्वभौमिक कल्याण के लिए योग के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए योगिराज श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया है कि 'तू योगी हो' अर्थात् तुम योगी बनो । योगी उस तपस्वी से अधिक उत्कृष्ट होता है जो कठोर उपवास और कर्मकाण्ड को करता है । इसी विषय को आधार बनाकर प्रस्तुत शोधपत्र है । जिसके मुख्य बिन्दु है 1. योग की परम्परा, 2. योग की परिभाषा, 3. अष्टांग योग, 4. गीता में योग का संदेश, 5. योग से सार्वभौमिक कल्याण ।

मुख्य-शब्द : योगपरम्परा, महत्तत्व, निष्काम कर्म, सकाम कर्म, अपरिग्रह, सार्वभौम महाव्रत, ईश्वरप्रणिधान, समाधि ।

Directorate of Distance Education

KURUKSHETRA UNIVERSITY, KURUKSHETRA

(Established by the State Legislature Act XII of 1956)
('A+' Grade, NAAC Accredited)

B.A. (General) Part - I

Lesson No. : 01 - 08

Sanskrit (Elective)

DIRECTORATE OF DISTANCE EDUCATION
KURUKSHETRA UNIVERSITY
KURUKSHETRA - 136 119

B.A. I Sanskrit (Elective) New Syllabus

L.No.	Title	Author	Page
घटक–1			
1.	श्रीमदभगवद्गीता द्वितीय अध्याय	डॉ. जितेन्द्र आचार्य	1
2.	हितोपदेशे (मित्रलाभः)	डॉ. कैलाश चन्द्र	32
घटक–2			
3.	नीतिशतक श्लोक	डॉ. जितेन्द्र आचार्य	54
4.	नीतिशतक सूक्ति	डॉ. जितेन्द्र आचार्य	86
घटक–3			
5.	शब्दरूप	डॉ. श्री कृष्ण शर्मा	106
6.	धातुरूप	डॉ. (श्रीमती) अरुणा शर्मा	122
घटक–4			
7.	सन्धि प्रकरण	डॉ. चित्तरजन दयाल सिंह कौशल	150
8.	छन्दः	डॉ. आर.पी. मिश्रा	170

B.A (GENERAL) PART-I

Paper: Sanskrit (ऐच्छिक)
Lesson No.: 1

Author: Dr. Jitender Acharya
Vetter: Prof. Ranvir Singh

श्रीमद्भगवद्गीता का द्वितीय अध्याय

अध्याय-1

1. भूमिका
2. प्रस्तावना
3. उद्देश्य
   - 3.1 पुस्तक परिचय
   - 3.2 द्वितीय अध्याय का सार
   - 3.3 श्लोकों की व्याख्या
4. आत्मनिरीक्षण हेतु प्रश्न
5. सहायक पुस्तक

B.A (GENERAL)
PART-I

Paper: Sanskrit (ऐच्छिक)
Lesson No.: 3

Author: Dr. Jitender Acharya
Vetter: Prof. Ranvir Singh

नीतिशतक

पाठ संरचना:

1. **प्रस्तावना (Introduction)**
2. **उद्देश्य (Objective)**
3. **वस्तुविवेचन (Presentation of Contents)**
   - 3.1 श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या
4. **आत्म-परीक्षणार्थ प्रश्न (SAQ)**
5. **सहायक पुस्तक**

Paper: Sanskrit (ऐच्छिक)
Lesson No.: 4

Author: Dr. Jitender Acharya
Vetter: Prof. Ranvir Singh

नीतिशतकम्

पाठ संरचना:

1. प्रस्तावना (Introduction)
2. उद्देश्य (Objective)
3. वस्तुविवेचन (Presentation of contents)

3.2.1 ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि तं नरं न रञ्जयति।

3.2.2 विद्याविहीनः पशुः।

3.2.3 ये चैवं पुरुषा.....लोकस्थितिः।

3.2.4 सत्संगतिः..... पुंसाम्।

3.2.5 सतां केनोद्दिष्टं.....व्रतमिदम्।

3.2.6 सर्वे गुणा काञ्चनमाश्रयन्ति।

3.2.7 सेवा धर्मो.....अप्यगम्यः।

3.2.8 निश्चितार्थाद्.....धीराः।

3.2.9 न्यायात् पथः.....न धीराः।

3.2.10 आलस्यं हि.....महान् रिपुः।

3.2.11 परिवर्तिनि संसारे.....न जायते।

3.2.12 जयन्ति ते.....कवीश्वराः।

3.2.13 वाग्भूषणं भूषणम्।

3.2.14 मूर्खस्य नास्त्यौषधम्।

3.2.15 विवेकभ्रष्टानाम् ..... शतमुखः।

4. सार (Summary)

5. आत्म-परीक्षणार्थ प्रश्न (SAQ)

6. सहायक पुस्तक

Directorate of Distance Education

KURUKSHETRA UNIVERSITY, KURUKSHETRA

(Established by the State Legislature Act XII of 1956)

('A+' Grade, NAAC Accredited)

B.A. (General) Part-II

SANSKRIT (ELECTIVE)

Lesson No. 1-8

DIRECTORATE OF DISTANCE EDUCATION
KURUKSHETRA UNIVERSITY
KURUKSHETRA – 136 119

B.A. (G) PART-II, SANSKRIT (ELECTIVE)

CONTENTS

Lesson No.	Title	Writer/Vetter/ Revised/ Updated / Edited By :	Page No.
1.	महाकवि भास व पञ्चरात्र	डॉ. जितेन्द्र आचार्य	1-12
2.	पञ्चरात्र का प्रथम अंक	डॉ. जितेन्द्र आचार्य	13-21
3.	रघुवंश महाकाव्य का द्वितीय सर्ग	डॉ. कैलाशचन्द्र विद्यालंकार	22-51
4.	शिवराज विजय	डॉ. जितेन्द्र आचार्य	52-67
5.	संस्कृत गद्य साहित्य का इतिहास	डॉ. जितेन्द्र आचार्य	68-84
6.	आधार भूत संस्कृत व्याकरण	डॉ. परमानन्द गुप्ता	85-118
7.	विजन्त तथा सन्नन्त धातुरूप	डॉ. जितेन्द्र आचार्य	119-126
8.	प्रत्याहार सूत्र तथा संज्ञा प्रकरण	डॉ. चितरंजन दयाल सिंह कौशल	127-142

विषय - संस्कृत (ऐच्छिक)
पाठ संख्या - 1

लेखक - डॉ जितेन्द्र आचार्य
संशोधक - डॉ रणवीर सिंह

महाकवि भास व पञ्चरात्र समवकार रूपक

पाठ की संरचना

1. परिचय (Introduction)
2. उद्देश्य (Objective)
3. वस्तुविवेचन (Presentation of Contents)
   - 3.1. भास का परिचय
   - 3.2. भास का जीवन व समय
   - 3.3. भास की रचनाएँ
   - 3.4. भास की भाषा-शैली
   - 3.5. पञ्चरात्र (समकार) रूपक की कथावस्तु
   - 3.6. मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण
4. सार (Summary)
5. प्रस्तावित सन्दर्भ-ग्रन्थ (Suggested Reference Material)
6. आत्मनिरीक्षण हेतु प्रश्न

1. परिचय (Introducation):

प्रस्तुत पाठ में महाकवि भास का परिचय दिया जाएगा इसके अन्तर्गत भास का जीवन, भ की रचनाएँ, भास की भाषा-शैली, भास विरचित पञ्चरात्र (समवकार) रूपक की कथावस्तु व मु पात्रों का चरित्र-चित्रण किया जाएगा।

2. उद्देश्य (Objective):

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम में निर्धारित महाकवि भास व उस समवकार रूपक पञ्चरात्र का ज्ञान कराना है।

3. वस्तुविवेचन (Presentation of Contents):

3.1. भास का परिचय

1912 ई. मे महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री नें भास विरचित स्वप्नवासवदतम् आदि 13 नाटक को अनन्तशयन ग्रन्थमाला में प्रकाशित कर भास को सर्वप्रथम नाटककार के रूप में संस्कृत साहि

विषय - संस्कृत (ऐच्छिक) | लेखक - डॉ जितेन्द्र आचार्य

पाठ संख्या - 2 | संशोधक - डॉ रणवीर सिंह

पञ्चरात्र समवकार का प्रथम अंक

पाठ संरचना

1. परिचय (Introduction)
2. उद्देश्य (Objective)
3. वस्तुविवेचन (Presentation of Contents)
   - 3.1. श्लोको की व्याख्या
     - 3.1.1 राज्ञां वेष्टपट्टघृष्टचरणा .....
     - 3.1.2 अतीत्य बन्धुनवलङ्घ्य .....
     - 3.1.3 कृतश्रद्धो ह्यात्मा वहति ....
     - 3.1.4 बाणाधीना क्षत्रियाणां समृद्धि .....
     - 3.1.5 इक्ष्वाकु शर्याति ययाति राम .....
     - 3.1.6 पीतः सोमो बाल्यदत्तो .....
     - 3.1.7 प्राणाधिकोऽस्मि भवता च.....
     - 3.1.8 येषां गतिः क्वापि .....
     - 3.1.9 वर्षेण वा वर्षशतेन .....
4. सार (Summary)
5. प्रस्तावित सन्दर्भ-ग्रन्थ (Suggested Reading and Reference Material)
6. आत्मपरीक्षणार्थ प्रश्न (SAQ)

विषय - संस्कृत (ऐच्छिक)
पाठ संख्या - 4
लेखक - डॉ जितेन्द्र आचार्य
संशोधक - प्रो. रणवीर सिंह

शिवराज-विजय

पाठ की संरचना

1. प्रस्तावना (Introduction)
2. उद्देश्य (Objective)
3. वस्तुविवेचन (Presentation of Contents)
   - 3.1. संस्कृत गद्य-साहित्य का संक्षिप्त परिचय
   - 3.2. लेखक का संक्षिप्त परिचय
   - 3.3. शिवराजविजय का परिचय
   - 3.4. प्रथम निःश्वास के प्रारम्भिक गद्यांश
4. सार (Summary)
5. आत्म परीक्षणार्थ प्रश्न (SAQ)
6. सहायक पुस्तक

विषय - संस्कृत (ऐच्छिक)
पाठ संख्या - 5
लेखक - डॉ जितेन्द्र आचार्य
संशोधक - डॉ आर. पी. मिश्रा

संस्कृत गद्य साहित्य का इतिहास

पाठ की संरचना

1. प्रस्तावना (Introduction)
2. उद्देश्य (Objective)
3. गद्य काव्य की परिभाषा
4. वस्तुविवेचन (Presentation of Contents)
   - 4.1 महाकवि बाणभट्ट
     - 4.1.1 जीवन व समय
     - 4.1.2 रचनाएँ
     - 4.1.3 भाषा शैली
   - 4.2 दण्डी
     - 4.2.1 जीवन व समय
     - 4.2.2 रचनाएं
     - 4.2.3 भाषा-शैली
   - 4.3 सुबन्धु
     - 4.3.1 जीवन व समय
     - 4.3.2 रचनाएं
     - 4.3.3 भाषा-शैली
   - 4.4 अम्बिकादत्त व्यास
     - 4.4.1 जीवन व समय
     - 4.4.2 रचनाएं
     - 4.4.3 अम्बिकादत्त की भाषाशैली
   - 4.5 विष्णुशर्मा
     - 4.5.1 समय व जीवन

विषय - संस्कृत (ऐच्छिक)
पाठ संख्या - 7

लेखक - डॉ जितेन्द्र आचार्य
संशोधक - डॉ आर.पी. मिश्रा

णिजन्त तथा सन्नन्त धातु के सिद्ध रूप

पाठ की संरचना

1. परिचय (Introduction)
2. उद्देश्य (Objective)
3. विषय वस्तु प्रस्तुतीकरण (Presentation of Contents)
   - 3.1. णिजन्त धातुरूप केवल लट् लकार
   - 3.2 सन्नन्त धातुरूप केवल लट् लकार
4. निष्कर्ष
5. आत्मबोध - प्रश्नसूची
6. सहायक सामग्री